International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अमृतलाल नागर की नाट्य रचनाओं का सामान्य परिचय

डॉ. मुकुल कुमार
हिंदी शिक्षक, पेंग्विन पब्लिक स्कूल,
झपहाँ, मुजफ्फरपुर

अमृतलाल नागर हिन्दी के शीर्षस्थ कलाकारों में एक हैं। कथा साहित्य के अतिरिक्त नागर जी व्यंग्य और नाट्य लेखन में भी सिद्धहस्त माने जाते हैं। उनकी नाट्य–चेतना अत्यन्त प्रखर है। उन्होंने छोटे–बड़े सत्ताईस नाटकों की रचना की हैं जिनमें से कुछ प्रख्यात साहित्यकारों पर हैं, कुछ पौराणिक पात्रों पर हैं और कुछ सामाजिक विषयों पर हैं।

रचनाकार की दृष्टि में 'युगावतार; इनका पहला नाटक है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के जीवन पर आधारित यह नाटक 1955 ई. में लिखा गया, 1973 ई. में प्रकाशित हुआ और पहली बार 23 सितम्बर, 1955 ई. को 'रंगवाणी', इलाहाबाद द्वारा मंचित हुआ।[1]

इस नाटक में तीन अंक और पन्द्रह पात्र हैं। पुरुष पात्रों की संख्या तेरह है और वे हैं–भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मथुरा दास, छक्कू जी, डॉ. ईश्वरचन्द्र चौधरी, मुख्तार, पं. अम्बिका प्रसाद व्यास, पं. सुधाकर द्विवेदी, नारायण कवि, सेवक कवि, सेठ जी, एक पुरुष, ब्राह्मण। स्त्री पात्र दो हैं–बहूजी (हरिचन्द्र की पत्नी) और मल्लिका।

इस नाटक के प्रारंभ में मथुरादास और छक्कू जी भारतेन्दु की निन्दा करते हैं और जब वे सामने आते हैं तो खुशामद करते हैं। नाटक के पहले अंक में हरिश्चन्द्र के वैभवपूर्ण व्यक्तित्व का जीवन्त चित्रण हुआ है। दूसरे अंम में जहाँ एक ओर हरिश्चन्द्र की दानवीरता और देशप्रेम की भावना की अभिव्यक्ति हुई है वहीं दूसरी ओर उनकी सामाजिक प्रतिबद्धता का चित्रण भी है। हरिश्चन्द्र और उनकी पत्नी के बीच के संवाद के माध्यम से उनके निर्लिप्तता रेखांकित की गई है। बानगी के तौर पर देखें–''हरिश्चन्द्र (उत्तेजित होकर) हम इन विषयों में तुम्हारे साथ बैठकर सलाह करना पसन्द नहीं करते। धन नानीजी का है, वे जिसे चाहें हाथ उठाकर दे दें। बहूजी नाना की जैनाद पर दोनों भाइयों का बराबर से हक है। वो उलटा वसीयतनामा हरगिज नहीं लिख सकतीं।

हरिश्चन्द्र – फिर वही। हम कहते हैं जिसका धन है उसे वसीयत करने का पूरा अधिकार है। और फिर धन जा तो रहा है, हमारे छोटे भाई के पास ही। तुम्हारा धनरूपी मोह दो भाइयों में दीवार खड़ी करना चाहता है। हरिश्चन्द्र इसे एक क्षण के लिए भी सहन नहीं कर सकता। भविष्य में हम इस सम्बन्ध में तुमसे या किसी से एक शब्द भी सुनना पसन्द नहीं करेंगे।''[2]

इतना ही नहीं कर्ज से डूबे हरिश्चन्द्र जहाँ एक ओ ओर नानी की उस वसीयत पर दस्तख कर देते हैं जिसके अनुसार नानी का सारा धन उसके छोटे भाई को मिलता है, वहीं दूसरी ओर इसे अपने ऊपर उपकार भी मानते हैं–

मुख्तार – अब हुजूर एक रस्म–अदायगी और बाकी रह गई है। हें! हें! कानून तो खैर कानून है मगर... एक तो वालिदा का दिल और फिर... वालिदा की वालिदा दिल, भला क्या पूछना वल्लाह, जवाब नहीं। हुजूर के पान और इत्र का खर्च भेजा है आपकी नानी साहिबा ने। हें! हें! (मथुरादास अंगोछे में बंधे नोटों की गड्डी निकालते हैं।)

मथुरादास – ई चार हज्जार रूपइया भेजिन है–

डॉ. ईश्वरचन्द्र – चार हाजार, बाबू शाएब! का वाश्ते केवल चार हाजार ?

मुनीम जी – (नाराज होते हुए) ई चार हजारै की कौन–सी जरूरत रहल? का हमरे हिंया कोऊ भूख बइठल हौं?

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हरिश्चन्द्र – (उठकर नोट लेते हुए) भाव का भूखा हरिश्चन्द्र यहाँ बैठा है मुनीम जी। हमने अपनी नानी से अनेक बार रुपये पाए हैं। उनके दिए एक–एक रुपये का मूल्य हम आज तक नहीं आंक पाए।

मुख्तार – वल्लाह! इलम कसम हुजूर, जवाब नहीं है।

हरिश्चन्द्र – (हंसकर) मुख्तार साहब, भला कैसा इल्म है आपका जिसमें किसी बात का जवाब ही नहीं ?

मुख्तार – (झेंपकर) हुजूर हें ! हें ! हें –

मथुरादास – हमने कहलाइन हैं बड़ी बाबूजी कि बबुआ से कहि देव... बुरा न मानें, हमने जो कुछ किया है, सोच–समझकर घर के फायदे के वास्ते किया है।

हरिश्चन्द्र – नानी जी कह दीजिएगा कि हमें इस बात का तनिक भी मलाल नहीं है। उन्होंने जो कुछ किया, उचित किया। आपने आज मुझ पर दो–दो उपकार किए–मेरी नालायकी के असीम दलदल से आपने मेरे गोकुल को उबार लिया और ऊपर से हमारे लिए यह हाथ–खर्च भी लाए। लीजिए हमारी ओर से यह पत्र–पुष्प स्वीकार कीजिए।''[3]

हरिश्चन्द्र की सामाजिक और देशभक्ति के साथ स्त्री शिक्षा के प्रति उनके गहरे अनुराग को इस नाटक में प्रस्तुत किया गया है–

हरिश्चन्द्र – मुनीम जी, यह रुपया जमा कर लीजिए। भगवान ने भले समय में यह सहायता भेजकर हमारी लाज रखी। (डॉक्टर साहब से) आपके नाम राशि पण्डित ईश्वरचन्द्र की विद्यासागर ने कलकत्ते में लड़कियों के लिए अंग्रेजी शिक्षा का प्रबन्ध करके देश का बड़ा उपकार किया।

डॉ. ईश्वरचन्द्र – उनके स्नेह और सौजन्य का उपकार हम किस प्रकार मानें? 'शकुन्तला' का अनुवाद करते समय उन्होंने इस घर का आतिथ्य स्वीकार कर इसे पवित्र किया था। ... (रूककर सोचते हुए) हमारा विचार है कि जिन बंगाली बालाओं ने इस वर्ष अंग्रेजी परीक्षा पास की है उन्हें हमारी ओर से बनारसी साड़ियाँ भेंटी दी जाए। मुनीम जी, साड़ियाँ खरीदने का प्रबन्ध कीजिए।

मुनीम जी – (सोचते हुए) पर... (कहकर डॉक्टर साहब की ओर देखते हैं।)

हरिश्चन्द्र – कह डालिए, डॉक्टर साहब तो घर के ही हैं।

मुनीम जी – सरकार, कई लोगों का ब्याज अदा करना है। वह...

हरिश्चन्द्र – सब की पाई–पाई अदा कीजिए। परन्तु यह भी सामाजिक ऋण है, देश का ऋण। (हंसते हैं। मुनीम जी सिर झुकाए चले जाते हैं) तीन ऋण चढ़ाकर तो भगवान हम भारतवासियों को जन्म ही देते हैं... और हम तो न जाने कितने प्रकार के ऋण से ग्रस्त होकर पृथ्वी पर आए हैं। (मुनीम जी दरवाजे के निकट पहुँचते हैं, बाहर से कोई डाक लेकर आ रहा था। मुनीम जी उसके हाथ से डाक लेकर फिर लौट पड़ते हैं। हरिश्चन्द्र जी अपनी बात को पूरा करते हुए कहते हैं–) अच्छा ही है.... ऋण के भार से हमारा मस्तक झुका रहेगा।''[4]

इस नाटक में भारतेन्दु और मल्लिका के प्रेम–प्रसंग को भी प्रस्तुत किया गया है। जब भारतेन्दु अशांत होते हैं, क्लांत होते हैं तो मल्लिका प्रेरणा–शक्ति के रूप में उन्हें सांत्वना देती है। इस नाटक में मल्लिका एक छाया के रूप में उपस्थित हुई है–

मल्लिका–(गान) राखो हे प्राणेश एह प्रेम करिया जतन,
तोमाय करेछि समर्पन।
जत दिन रबे प्रान श्री चरने दियो स्थान,
हरिश्चन्द्र प्रानधन एइ अकिंचन।
'चन्द्रिकार' हृदय धन नाहिक तोमा बिहन।
तब करे ते अर्पन करेछि जीवन मन।

छया समाप्त होती है, पुनः सफेद परदे पर दीवार का एक भाग छायांकित हो जाता है।

ध्यानस्थ हरिश्चन्द्र एक स्वप्न टूटने के बाद जैसे उठते हैं, एक निःश्वांस छोड़ उठते हुए कहते हैं–

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हरिश्चन्द्र – मेरे मन अनत कहां सुख पावै?... नटनागर, प्रेम की डोर से दोनों सिरों पर हरिश्चन्द्र को बांधकर तुमने उसे कैसा छकाया है। हे इस जगत् के कर्त्ता और प्रभु, तुम पर से आज मेरा विश्वास उठता जा रहा है। क्या इस कमल–वन रूप भारत–भूमि को दुष्ट गजों ने तुम्हारी इच्छा के बिना ही छिन्न–भिन्न कर दिया? क्या सज्जन लोग विद्यादि सुगुणों से अलंकृत होकर तुम्हारी इच्छा के बिना ही दुखी होते और दुष्ट मूर्खों के अपमान सहते हैं? प्रभु तुमने अब तक मुझे कौन–सा नाच नहीं नचाया? किन्तु कुछ चिन्ता नहीं हरिश्चन्द्र! कितना ही दुःख हो उसे ही सुख मानना तेरा तो यही बाना है। लोभ के परिल्याग के समय तू ने नाम और कीर्ति तक का परित्याग कर दिया। जगत् से विपरीत गति चल के तूने प्रेम की टक्साल खड़ी की है। क्या हुआ जो निर्दय ईश्वर तुझे प्रत्यक्ष आकर अपने अंक में रखकर आदर नहीं देता!! और खल लोग नित्य तेरी एक नई निन्दा करते हैं.... करने दो।

कहेंगे सबैही नयन नीर भरि–भरि पाछे।
प्यारे हरिश्चन्द्र की कहानी रह जायेगी।''[5]

इस नाटक में भारतेन्दु की सहृदयता, राष्ट्रभाषा के प्रति प्रेम आदि का चित्रण भी हुआ है। अकाल पीड़ितों की मदद के लिए भारतेन्दु भिक्षाटन तक करने में संकोच नहीं करते। नाटक का अंतिम भाग है–

लोगों की आवाज – भारतेन्दु नंगे सिर कुरता व चूड़ीदार पायजामा पहने हाथ में नारियल का खप्प लिए प्रवेश करते हैं। उन्हें इस तरह देखकर आने–जाने वाले लोग आश्चर्यचकित रह जाते हैं। 'बाबू साहब, आप?' 'अरे, बाबू साहब यह क्या? अकाल पीड़ितों के लिए भीख मांग रहे हैं–धन्न हो दीनबन्धु' आदि प्रश्न और बातें चारों ओर से उन्हें घेर लेती हैं।

हरिश्चन्द्र – विदेशियों के लूटे, अकाल के मारे दरिद्र भारत की बांह गहो जन जनार्दन! अपने सबल स्वस्थ मन, सत्य वचन और जन कल्याणकारी कर्मों से देश की झोली भर दो! हरिश्चन्द्र तुम्हें पुकार रहा है। युग तुम्हें पुकार रहा है।''[6]

इस प्रकार यह नाटक एक युग पुरुष के व्यक्तित्व के अनेक पक्षों को उद्घाटित करने वाला सफल नाटक है। इस नाटक का कलेवर छोटा है किन्तु नायक हरिश्चन्द्र के व्यक्तित्व की इसमें अत्यन्त जीवन्तता के साथ उभारा गया है।

'नुक्कड़ पर' नागर जी का दूसरा नाटक है। इस नाटक में भी तीन अंक हैं। पहले अंक में एक ही दृश्य है किन्तु दूसरे अंक में तीन और तीसरे अंक में दो दृश्य हैं। 1963 में लिखित इस नाटक में 12 पुरुष पात्र और चार स्त्री पात्र हैं। नाटक का प्रारंभ ही नुक्कड़ से होता है। नाटक के कुछ दृश्य द्रष्टव्य है–

आनन्द – हट जाता हूँ महाराज, क्षमा कीजिएगा, बहुत थक गया था इसलिए...। (चबूतरे से उतरता है। जमना पंडित चबूतरे पर चढ़कर कहते हैं।)

जमना – सुनो जिजमान ! अरे रावण तू आँखें दिखता है क्या, तेरे मन में तो दीनो धरम भी नहीं। मै। पांव लादे खड़ा और तू रथ चढ़ा, तेरे पांव में डटने का दम ही नहीं। अब जरा देख हम तू सिरीराम का, तेरी नाभी में भर दूं चिलम पर चिलम– (मस्ती में बायां हाथ फैलाने से गुलाबजल की शीशी लुढ़कने लगकती है। चबूतरे के नीचे बैठा आनन्द तुरत शीशी सम्हाल लेता है।)''[7]

इस नाटक में जहां एक ओर कस्बाई जीवन की दिशाहीन हो रहे युवाओं का चित्रण किया गया है वहीं शहरी आंचलिकता को भी रेखांकित किया गया है। इसमें शराब और सुन्दरी के चक्कर में पथभ्रष्ट हो रहे युवक का वर्णन है तो शराब के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर देने वाली युवती का भी–

आनन्द – (चौंककर उसे देखता हुआ) तुम फिर आ गई?

रीटा – (खिसीयाई हंसी हंसकर) और जाऊँगी कहाँ? गाहक नहीं, पैसा नहीं और आदतें तो बिगड़ ही चुकी है। लेकिन तुम रो रहे थे, मैनेजर बाबू।

आनन्द – मिस रीटा, जाओ यहाँ से, मैं इस वक्त एकान्त चाहता हूँ।

रीटा – मैं भी तुम्हें परेशान नहीं करना चाहती, मैनेजर बाबू। बस तुम मुझे एक पैकेट में 4–5 कटलेट्स मछलियाँ कुछ भी दिलवा दो और एक गिलास रम। मैं बाहर चली जाऊँगी।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आनन्द – (बोतल निकालकर एक बार रीटा की ओर देखता है, फिर लाइट में एक बार बोतल को हिलाकर) ले लो, दफा हो जाओ।

रीटा – हाय, तुम बड़े अच्छे हो, मैनेजर बाबू। इस जगह के काबिल नहीं। और तुम्हारी भोली–भाली मिसेज भी ऐसी है जैसी सड़ांध भरे तहखाने में आने वाली ताजी हवा का झोंका। छोड़ दो यह जगह, चले जाओ यहाँ से, यहाँ की जिन्दगी जिन्दगी नहीं, मौत से भी बदतर है।''[8]

समाज में जो रक्षक हैं वही भक्षक की भूमिका में उतर आए हैं और नुक्कड़ उनके लिए मंच बन गया है–

दरोगा – (रसीली का हाथ पकड़कर) चल री रसीली !

किशोरी – अरे दरोगा बाबू, बिचारी अभी दो दांत की है, दया करो।

दरोगा – दया करूँगा। कल सवेरे आ जाएगी। हाँ मैनेजर बाबू वो लाओ और एक बोतल रम भी दो।

रसीली – (रोकर) लाला !

दरोगा – (हंसकर) लाल साला क्या करेगा। अबे ओ घी के कुप्पे, चुप करा इसको।

किशोरी – (उदास आंखें पोंछते हुए) चली जाओ रसीली बाई, यहाँ बड़े–बड़े सरकारी टिक्कस देने पड़ते हैं।

रीटा – (किशोरी के पास आकर उसके सिर पर हाथ फेरते हुए) रो मत मुन्ने मैं तुम्हें ऐसी तरकीब बताऊँगी कि दरोगा तुम्हारे पैर ही पकड़ते नजर आएगा।

किशोरी – अरे रीठा बाई। ये पुलिस है, सो भी कस्बे की पुलिस, किसी को कत्ल भी कर दे तो पता न चले। सारा बजार कह रहा है कि आज खुमान सिंह को इसी दरोगे ने गोली मारी है।

रीटा – किशोरी डियर, तसल्ली रखो। रसीली अब तुम्हारे हाथ नहीं लगेगी।

किशोरी – क्यों ?

रीटा – कटोरी के घर दुबई बहरीन का कोई सौदागर आया है, दारोगा उसी के हाथ बेंच देगा।

किशोरी – अरे, बेंचता तो मैं भी पर अब तो यही साला माल भी खा जाएगा और मजा भी ले जाएगा।... तुम खाली हो?

रीटा – हाँ।

किशोरी – चलो रीटा बाई, हमारा गम आज तुम्हें गलत कर देव। मनेजर बाबू, हम शाम को अनोखेसे एक कमरा बुक करवाए गए थे।

आनन्द – जी हाँ, ये टोकरी लीजिए।

किशोरी – आओ रीठा बाई, तुम्हें हमारी असली रसीली हो।

रीटा – (बगल में छिपी हुई बोतल निकालकर काउण्टर पर रखती है।) मेरा आज का काम निकल गया, मैनेजर बाबू, धन्यवाद। (जाती हूँ)''[9]

नाटक के अंत में नाटक के कथ्य को पूरी तरह उभारा गया है। आनन्द किरण का पति है तो पद्मा के बच्चे का बाप भी है। अपनी पत्नी से टूटकर वह पद्मा से सम्बद्ध होता है। पद्मा अपने बच्चे को बाप का नाम देना चाहती है। नाटक का अंतिम दृश्य कथानक की पूरी तीव्रता देता है–

आनन्द – (गोद में लेकर) तो तूने मुझे पिता बना दिया।

पद्मा – लेकिन जब बड़ा होकर ये पूछेगा मुझसे– मां, मेरे पिताजी कहाँ हैं?... क्या जवाब दूँगीं?

आनन्द – (निःश्वास) अब गले–गले तक दल–दल में फँस चुका हूँ पद्मा, मुझे क्षमा करो। (बच्चे को देता है। जमना आता है।)

जमना – लो जिजमान।

आनन्द – यह क्या है ? रुपये ?

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 8 Issue 2, February 2018
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

जमना – तुम्हारे ही हैं जिजमान ! धरम के हैं। सच्ची, भैरो बाबा की सौगंध। इन्हें लो, और जाओ यहाँ से। ये नई जिन्दगी तुम्हें लेने आयी है। इन्हें ले जाओ, बहू। जल्दी से ले जाओ। वो चुड़ैल मौत आनेवाली है। जाओ बाबू। इस धन से छोटा–मोटा धंधा करना। दो बरस में कंचर बरसने लगेगा। महापंडित रावण के वचन कभी झूठे नहीं निकले। जाओ बहू! (दोनों रावण के पैरों पर झुकते हैं।)

जमना – बस–बस–बस! दम्भ के चरण नहीं छुए जाते। जाओ जल्दी। मेम साब की मोटर लेकर जल्दी से टेसन भागो। कहता हूँ जाओ यहाँ से। सिद्ध करो। (जाने लगते हैं) मंगलं भगवान विस्णो मंगलं गरूड़ध्वजां। मंगलं पुंडरीकाक्छः मंगलाय...'' (किरन बोतल लिए आती है)

किरन – आनन्द कहां गए ?

जमना – जिन्दगी के पास।

किरन – जिन्दगी क्या?

जमना – उसके बच्चे की माँ आई थी। अपने साथ ले गई।

किरन – धोखा! मैं मार डालूँगी उसे। जान ले लूँगी।

जमना – अब वो तुम्हारे हाथ नहीं आएगा, मेम साब।

किरन – नहीं आएगा (चीखकर रोती हुई) नहीं... ! मैं उसे लाके रहूँगी। छोड़ो मुझे।

जमना – (हंसकर) वह तो अब नहीं मिलेगा। तुम्हारी मोटर गाड़ी से टेसन पहुँच चुका होगा अब तलक। टेसन के बाहर तुम्हारी मोटर गाड़ी तुम्हें अवस्त मिल जाएगी। ह..ह...ह.. जिन्दगी के सब अपनू पूरी नहीं होते। जाओ, मौज करौ या मरौ!

किरन – (रुदन प्रलाप) मैं मौत नहीं, जिन्दगी चाहती हूँ। वह क्यों नहीं मिली मुझे, क्यों नहीं मिली (रोती है)

जमना – निराश न हो बेटी ! तुम चाहोगी तो तुम्हें भी मिलेगी। जिन्दगी हरेक के वास्ते नुक्कड़ पर रहती ही है, चाहनेवाले को अवस्स मिलती है।

किरन – (पागल–सी चीखती है) नहीं मिलती ! तमुझे नहीं मिली – नहीं मिली रा...म...!

किरन फूट–फूटकर रोती है। जमना उसके सिर पर प्यार से हाथ फेरता है।''[10]

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि नागरजी के नाटक मनुष्यता की तलाश के नाटक हैं। उनमें अतीत की गरिमा भी है और वर्तमान की दर्दुशा भी। अपने समय की जनता को जाग्रत करने और मूल्यों की ओर उन्मुख करने के लिए उन्होंने नाटक विधा का चुनाव किया और इसमें वे सफल भी रहे।

संदर्भ सूची

1. अमृतलाल नागर रचनावली, आठवाँ खण्ड, पृ. 10.
2. 'युगावतार' शीर्षक नाटक से अमृतलाल नागर रचनावली, आठवाँ खण्ड, पृ. 14.
3. उपरिवत्, पृ. 16.
4. उपरिवत्, पृ. 17.
5. उपरिवत्, पृ. 26.
6. उपरिवत्, पृ. 29.
7. 'नुक्कड़ पर' से उपरिवत्, पृ. 31–32.
8. उपरिवत्, पृ. 46.
9. उपरिवत्, पृ. 47–48.
10. उपरिवत्, पृ. 62–63.